Angoothe Choomne ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 433
Weekly Booklet : 433

अंगूठे चूमने की बरकतें

(सफ़हात : 28)

अज़ान के वक़्त अंगूठे चूमने का सवाब 06
4 मवाक़ेअ़ पर अंगूठे न चूमें 16
तुर्क आशिक़ाने रसूल का महब्बत भरा अन्दाज़ 21
अंगूठे चूमने के बावुजूद चश्मा लगा हो तो 27

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

अंगूठे चूमने की बरकतें

दुआए अ़त्तार : या रब्बल इ़ज़्ज़त ! जो कोई 28 सफ़ह़ात का रिसाला "अंगूठे चूमने की बरकतें" पढ़ या सुन ले उस को हमेशा अज़ानो इक़ामत में अंगूठे चूमने की सआ़दत दे कर आख़िरी सांस तक उस की आंखों का नूर सलामत रख और मां बाप समेत उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

बाइ़से मग़्फ़िरत दुरूद शरीफ़

आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : (मराकिश के शहर) फ़ास में एक आ़शिक़े रसूल ख़ातून रहा करती थीं, उन्हें जब कोई परेशानी पहुंचती या घबराहट त़ारी होती तो वोह अपने दोनों हाथ चेहरे पर रखतीं और आंखें बन्द कर के कहतीं : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)। (नामे मुस्त़फ़ा की बरकत से उन की परेशानी दूर हो जाती), जब उस आ़शिक़े रसूल ख़ातून की वफ़ात हुई तो किसी रिश्तेदार ने ख़्वाब में देख कर पूछा : फूफीजान ! क्या आप ने क़ब्र में सुवालात करने वाले दो फ़रिश्ते मुन्कर नकीर देखे हैं ? फ़रमाया : जी हां ! वोह मेरे पास आए थे, मैं ने उन्हें देख कर अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ दोनों हाथ चेहरे पर रख कर कहा : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم), जब मैं ने चेहरे से अपने हाथ हटाए तो वोह दोनों तशरीफ़ ले जा चुके थे। (شواہد الحق، ص 230)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

है तो नामे मुह़म्मद सहारा अपना इसी से चलता है गुज़ारा अपना
हमें तूफ़ां की मौजों का कुछ ख़ौफ़ नहीं हम इसी नाम से पा लेंगे किनारा अपना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अंगूठे क्यूं नहीं चूमते ?

तक़रीबन 700 साल पहले के मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते शैख़ नूरुद्दीन ख़ुरासानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुअज़्ज़िन को अज़ान में "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहते सुना तो अपने दोनों अंगूठे चूमे और उन के नाख़ुन अपनी पल्कों पर मले, जब दूसरी बार मुअज़्ज़िन ने पढ़ा तो फिर यूंही किया, आप से इस अ़मल की वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : मैं पहले अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाता था लेकिन बाद में ऐसा करना छोड़ दिया तो मेरी आंखें ख़राब हो गईं, मुझे ख़्वाब में प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई तो फ़रमाया : तू ने अज़ान के वक़्त आंखों पर अंगूठे लगाने क्यूं छोड़ दिये ? अगर तू चाहता है कि तेरी आंखें दुरुस्त हो जाएं तो दोबारा अंगूठे चूमना शुरूअ़ कर दे फिर मैं बेदार हुवा और मैं ने अंगूठे चूमने का अ़मल किया तो मेरी आंखें ठीक हो गईं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! उस के बाद से आज तक मेरी आंखें कभी ख़राब नहीं हुईं। (حاشیہ علی کفایۃ الطالب الربانی، 1/170)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

नामे मुह़म्मद कितना मीठा मीठा लगता है प्यारे नबी का ज़िक्र भी हम को प्यारा लगता है
आओ सुनाएं अपने पिया को अपने मन की बात उन के इ़लावा कौन नियाज़ी अपना लगता है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! नामे "मुह़म्मद" صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मह़ब्बत व ताज़ीम के साथ अंगूठे चूमना मुसलमानों का शुरूअ़ से मामूल रहा है बल्कि येह मुबारक अ़मल तमाम इन्सानों के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते आदम सफ़ियुल्लाह

عَلَيْهِ السَّلَام से भी साबित है और यक़ीनन सआ़दतमन्द औलाद अच्छे कामों में अपने वालिद के पीछे चलती (यानी उन्हें फ़ॉलो करती) है।

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अंगूठे चूमे

तीन सौ साल पहले के बुज़ुर्ग शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1137 हि.) तफ़्सीरे क़ुरआन "रूहुल बयान" में लिखते हैं : एक रिवायत में है कि ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पीछे फ़रिश्ते आते थे, जब आप ने पूछा कि ऐसा क्यूं करते हैं ? बताया गया कि आप की पीठ में नूरे मुस्त़फ़ा है जिस की येह ज़ियारत करते हैं, आगे चल कर येह आख़िरी नबी बन कर ज़ाहिर होंगे। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ की : या **अल्लाह** पाक ! इस नूर को पीछे के बजाए आगे कर दे ताकि फ़रिश्ते पीछे से ज़ियारत करने न आएं, इस के बाद वोह नूर आप عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में चमकने लगा और फ़रिश्ते आगे से ज़ियारत करने लगे, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** ! मैं भी नूरे मुस्त़फ़ा देखना चाहता हूं, यूं वोह नूर आप के अंगूठों में ज़ाहिर हो गया और आप ने अंगूठे चूम लिये।

(تفسیرِ روح البیان، پ22، الاحزاب، تحت الآیۃ:56، 7/229ماخوذاً۔ الروض الفائق، ص241ملتقطاً)

हम अंगूठे क्यूं चूमते हैं ?

سُبْحٰنَ الله ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम व मह़ब्बत में जो आ़शिक़ाने रसूल अ़क़ीदत से अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाते हैं वोह रह़मते ख़ुदावन्दी के ह़क़दार हैं क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने क़ुरआने करीम में हर मोमिन को अपने प्यारे प्यारे नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो ताज़ीम करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, जैसा कि पारह 26, सूरतुल फ़त्ह़, आयत नम्बर 9 में इरशाद होता है : ﴿وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ۝۹﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और रसूल की ताज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की पाकी बयान करो।

मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की इस आयते मुबारका के बारे में बहुत प्यारी गुफ़्तगू आसान कर के पेश की जाती है, आप फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक अपने ह़बीब मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत, दिल में सच्ची अ़ज़मत दे और इसी पर हम सब का ख़ातिमा करे। اٰمِیْن یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْن

मुसलमानो ! देखो तुम्हारे मौला तबारक व तआला का दीने इस्लाम भेजने, क़ुरआने मजीद उतारने का मक़्सूद ही तीन बातें बताना है : ﴾1﴿ लोग **अल्लाह** व रसूल पर ईमान लाएं। ﴾2﴿ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम करें। ﴾3﴿ **अल्लाह** पाक की इ़बादत में रहें।

मुसलमानों ! इन तीनों अहम तरीन बातों की ख़ूबसूरत तरतीब तो देखो, सब से पहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया और सब से आख़िर में अपनी इ़बादत को और दरमियान में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीम को, इस लिये कि बग़ैर ईमान, ताज़ीम फ़ाइदेमन्द नहीं कि येह ज़ाहिरी ताज़ीम हुई, दिल में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची अ़ज़मत होती तो ज़रूर ईमान लाते, फिर जब तक नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची ताज़ीम न हो उ़म्र भर इ़बादते इलाही में गुज़ारे सब बेकार व मर्दूद है। (फ़तावा रज़विय्या, 30/307, 308 मुलख़्ख़सन)

(मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये "تَمْہِیْدِ اِیْمَان بِآیَاتِ قُرْآن", येह रिसाला फ़तावा रज़विय्या की 30वीं जिल्द में सफ़ह़ा नम्बर 305 ता 358 पर है हर मुसलमान को येह रिसाला ज़रूर पढ़ना चाहिये)

ताज रखा तेरे सर رَفَعْنَا का
किस क़दर तेरी इ़ज़्ज़त बढ़ाई है

(सामाने बख़्शिश, स. 192)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने रसूल ! ऊपर बयान की गई आयते मुबारका में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व ताज़ीम करने का मुत़लक़ त़ौर पर फ़रमाया गया है कोई क़ैद बयान नहीं हुई कि इस त़रह़ ताज़ीम करो और इस त़रह़ न करो, लिहाज़ा अगर कोई नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर मह़ब्बत व अ़क़ीदत से अंगूठों या कलिमे की उंगलियों के पोरों को चूम कर आंखों से लगाता है तो उसे ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करने का अ़ज़ीमुश्शान सवाब मिलेगा बल्कि हो सकता है उस का येह अदब का अन्दाज़ उस की मग़्फ़िरत का सबब बन जाए, जैसा कि

नामे मुह़म्मद चूमने से बख़्शिश हो गई

ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में एक आदमी था जो दो सौ साल तक **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करता रहा, जब वोह फ़ौत हो गया तो लोगों ने उसे टांगों से घसीट कर गन्दगी के ढेर पे फेंक दिया, **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि जा कर इस की नमाज़े जनाज़ा अदा करें, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** पाक ! बनी इसराईल कहते हैं कि वोह दो सौ साल तक तेरी ना फ़रमानी करता रहा है, **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : वोह ऐसा ही था मगर वोह जब भी तौरात खोलता और नामे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को देखता तो उसे चूम कर आंखों से लगाता और उन पर दुरूद पढ़ता था पस मैं ने उस का येह अ़मल क़बूल कर के उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये हैं और 70 जन्नती ह़ूरों से उस का निकाह़ कर दिया है।

(حلیۃ الاولیا، 4/45، رقم:4695)

ताज़ीम जिस ने की मुह़म्मद के नाम की ख़ुदा ने उस पे नारे जहन्नम ह़राम की

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए को बड़े बड़े उ़लमाए किराम और मुह़द्दिसीने इ़ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने अपनी किताबों में लिखा है और उसे बयान करने वाले ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुद ताबेई़ बुज़ुर्ग हैं जिन के बारे में

हदीसे पाक बयान की जाती है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में एक शख़्स होगा जिस का नाम वहब होगा, **अल्लाह** पाक उसे हिक्मत अ़ता फ़रमाएगा।" (دلائل النبوۃ للبیہقی، 496/6)

इन्जील शरीफ़ में नामें मुस्तफ़ा

मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी "मसनवी" में लिखते हैं कि इन्जील शरीफ़ में नामे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم था जिसे अदबो ताज़ीम में ख़ुश नसीब चूमा करते थे, **अल्लाह** पाक ने इस की बरकत से उन्हें कई आफ़तों और मुसीबतों से मह़फ़ूज़ फ़रमाया और जिन्हों ने इस बा बरकत नाम की बे अदबी की वोह दुनिया में ही ज़लीलो रुस्वा हुए। (مثنوی، 102/1 ملخصاً)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अज़ान के वक़्त अंगूठे चूमने का सवाब

तक़रीबन दो सौ साल पहले के बहुत बड़े आ़लिम व मुफ़्ती ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1252 हि.) अपने मश्हूरे ज़माना फ़तावा शामी में लिखते हैं : जब मुअज़्ज़िन "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहे तो मुस्तह़ब है कि सुनने वाला कहे : "صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ الله" और जब दूसरी मरतबा येह कलिमात सुने तो यूं कहे "قَرَّتْ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُولَ اللهِ اللّٰهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ" और अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाए ऐसा करने वाले को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने साथ जन्नत में ले जाएंगे।

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किताबुल फ़िरदौस के ह़वाले से फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखते हैं : "مَنْ قَبَّلَ ظُفْرَيْ اِبْهَامِهِ عِنْدَ سَمَاعِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله فِي الْاَذَانِ اَنَا قَائِدُهٗ وَمُدْخِلُهٗ فِي صُفُوْفِ الْجَنَّةِ" यानी जो शख़्स अज़ान में "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله

सुन कर अपने अंगूठों के नाख़ुनों को चूम लिया करेगा मैं ऐसे शख़्स की क़ियादत करूंगा और उसे जन्नत की सफ़ों में दाख़िल करूंगा। (ردالمحتار،2/84)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा का अ़मल

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ ने जब मुअज़्ज़िन को "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहते सुना तो येह दुआ़ : "رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيناً وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ نَبِيًّا" पढ़ी और दोनों कलिमे की उंगलियों के पोरों के अन्दरूनी ह़िस्से चूम कर आंखों से लगाए इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "مَنْ فَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ خَلِيْلِيْ فَقَدْ حَلَّتْ عَلَيْهِ شَفَاعَتِيْ" तर्जमा : जिस त़रह़ मेरे ख़लील ने किया है जो ऐसा करेगा उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त है। (المقاصد الحسنة، ص390، تحت الحدیث:1021)

अब आई शफ़ाअ़त की साअ़त अब आई ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 159)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : शफ़ाअ़त : सिफ़ारिश। **साअ़त :** घड़ी। **चैन :** सुकून।

शर्ह़े कलामे रज़ा : क़ियामत के सख़्त हौलनाक मनाज़िर और मुश्किल तरीन ह़ालात में **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के फ़ज़्लो करम से जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने उम्मतियों की शफ़ाअ़त की इजाज़त का परवाना इ़नायत होगा उसी ईमान अफ़रोज़ वक़्त की मन्ज़र कशी करते हुए इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ मुजरिम ! ऐ गुनहगार ! ऐ क़ियामत के इम्तिह़ान से डरने वाले ! हिम्मत कर, सब्र कर, शाफ़ेए उम्मत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का वक़्त आ गया है, तू क़ियामत की सख़्ती से न घबरा बल्कि पुर सुकून हो जा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सहाबी का अ़मल हमारे लिये काफ़ी है

तक़रीबन सवा चार सौ साल पहले के बुज़ुर्ग अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 1014) आशिक़े अकबर, मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه वाली रिवायत लिखने के बाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه का येह अ़मल हमारे लिये (अंगूठे चूमने में) सुबूत के लिये काफ़ी है क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुम पर अपनी सुन्नत और अपने ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत (यानी त़रीक़े को) लाज़िम करता हूं।

(الاسرار المرفوعۃ فی الاخبار الموضوعۃ، ص306، تحت الحدیث:435)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन से मुराद मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म, तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُم हैं फिर छे महीने के लिये ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه ख़लीफ़ा हुए, इन की ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़ते राशिदा कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, 1/241 ह़िस्सा : 1 बतग़य्युर)

अल्लाह पाक के नज़्दीक भी अच्छा

सहाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "فَمَا رَأَى الْمُسْلِمُوْنَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللهِ حَسَنٌ। यानी जिसे मुसलमान अच्छा ख़याल करें वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक भी अच्छा है।"

(مسند امام احمد، 2/16، حدیث:3600)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस रिवायत में जो येह फ़रमाया गया है कि "जिसे मुसलमान अच्छा समझें" यहां मुसलमानों से मुराद किताब व सुन्नत का इ़ल्म रखने वाले, ह़राम और शुबुहात से अपने आप को बचाने वाले उ़लमाए किराम हैं। (مرقاۃ المفاتیح، 3/480، تحت الحدیث:1385)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़लमाए किराम, नेक बन्दों और आ़म मुसलमानों के नज़्दीक किसी शै का जाइज़ व मुस्तह़सन (यानी पसन्दीदा) होना, **अल्लाह** पाक के हां भी जाइज़ व मुस्तह़सन है और येह क्यूं न हो कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "إِنَّ أُمَّتِي لَا تَجْتَمِعُ عَلَى ضَلَالَةٍ" यानी बेशक मेरी उम्मत गुमराही पर जमा नहीं हो सकती। (ابن ماجہ، 4/327، حدیث:3950)

सदियों से मुफ़्तियाने दीन और उ़लमाए कामिलीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم ने शरई़ उसूलों से इस ह़दीसे पाक "فَمَا رَأَى الْمُسْلِمُونَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ حَسَنٌ" यानी जिसे मुसलमान अच्छा ख़याल करें वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक भी अच्छा है। (مُسندِ امام احمد 2/16، حدیث:3600) से कई मसाइल बयान फ़रमाए हैं जिन्हें फ़िक़्ह की बड़ी बड़ी किताबों में देखा जा सकता है। जैसा कि

अपनी ज़िन्दगी में अपने लिये क़ब्र बनवाना

600 साल पहले के मश्हूर शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बद्रुद्दीन ऐ़नी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपनी किताब "عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری" में अपनी ज़िन्दगी में अपने लिये क़ब्र तय्यार करने पर एक एतिराज़ का जवाब देते हुए येह उसूल बयान किया कि किसी अ़मल का सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित न होना, इस अ़मल के नाजाइज़ होने की दलील नहीं क्यूंकि जिस अ़मल को मुसलमान अच्छा जानें वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक भी अच्छा है ख़ुसूसन इस सूरत में कि जब वोह अ़मल नेक लोग भी कर रहे हों। मज़ीद अपने से भी चार सौ साल पहले के मुह़द्दिस इमाम बत्ताल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में लिखते हैं : नेक बन्दों की एक जमाअ़त ने अपनी मौत से पहले अपनी क़ब्रें बनाई हैं ताकि वोह इस से मौत आने का तसव्वुर क़ाइम रखें, बाज़ लोगों ने इस पर एतिराज़ किया कि किसी एक सह़ाबी ने भी अपनी ज़िन्दगी में अपनी क़ब्र नहीं बनाई अगर ज़िन्दगी में क़ब्र बनाना मुस्तह़ब होता तो सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم) में येह अ़मल बहुत ज़ियादा होता (ह़ालांकि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से ऐसा करना साबित नहीं है) तो (जवाबन) मैं येह कहता हूं कि इस अ़मल का किसी

सह़ाबी से साबित न होना, उस अ़मल के नाजाइज़ होने को लाज़िम नहीं करता क्यूंकि जिस चीज़ को ईमान वाले अच्छा ख़याल करें तो वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक भी अच्छी होती है और ख़ुसूसन जब कि वोह काम करने वाले लोग बेहतरीन नेक बन्दों में से हों।

(عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری،6/84۔شرح البخاری لابن بطّال،3/267،تحت الحدیث:1277)

नाजाइज़ कहने के लिये दलील चाहिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल (Rule) ज़ेहन में बैठा लीजिये कि जिस काम से शरीअ़त में कहीं मना नहीं किया गया तो इस का मत़लब येह है कि वोह जाइज़ है अब किसी के कहने से वोह काम नाजाइज़ नहीं होगा क्यूंकि नाजाइज़ कहने के लिये शरीअ़त की दलील चाहिये।

बाज़ नादान अ़ाम भोले भाले अ़ाशिक़ाने रसूल को परेशान करने और सीधे रास्ते से भटकाने के लिये अंगूठे चूमने या जशने विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर घर सजाने या जुलूसे मीलाद में जाने की दलील मांगते हैं ह़ालांकि दलील उन को देनी चाहिये कि दिलों में इ़श्क़े रसूल बढ़ाने वाले इन नेक और पाकीज़ा कामों से क़ुरआनो ह़दीस में कहां मना किया है ? जब कहीं मना करने का हुक्म नहीं तो फिर क्यूं ग़लत़ फ़हमी फैला कर लोगों को परेशान करते और तश्वीश में मुब्तला करते हैं ? ऐसों को चाहिये कि वोह ज़रा ग़ौर तो करें कि मुसलमानों को किस मुक़द्दस काम यानी नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़क़ीदतो मह़ब्बत का इज़्हार करने से मना कर रहे हैं। ऐसे लोग क़ियामत के दिन बारगाहे रिसालत में किस मुंह से ह़ाज़िर होंगे। काश ! येह फ़ौरन से पहले तौबा करें वरना मरने के बाद सख़्त पछतावा हो सकता है।

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम   अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

फ़ैसला आप का ?

तक़रीबन दुनिया भर में येह दस्तूर है कि अपने वतन का तराना पढ़े जाने के वक़्त पूरी क़ौम अदब में खड़ी होती है और जो कोई इस के बरअक्स करे उसे बाज़ औक़ात तिरछी नज़रों से भी देखा जाता है, कपड़े के बने झन्डे को इ़ज़्ज़त व ताज़ीम की निशानी "सलूट" किया जाना है, आज तक पूरी दुनिया में आप ने कभी नहीं सुना होगा कि किसी ने उस अ़मल की मुख़ालफ़त की हो या उसे गुनाह का काम कहा हो ह़ालांकि क़ुरआनो ह़दीस में उस का हुक्म नहीं और दौरे सह़ाबा में भी येह काम दूर दूर तक नहीं हुवा।

बल्कि जो अपने वत़ने अ़ज़ीज़ के तराने पर खड़े होने या सलूट करने के बारे में मन्फ़ी गुफ़्तगू करेगा तो हो सकता है उसे "वत़न के ग़द्दार" का लक़ब मिले तो जो नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ताज़ीम और अदब करने से रोके उसे क्या लक़ब देना चाहिये ?

जब भी नामे पाक आए

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अज़ान के इ़लावा भी मह़ब्बत व ताज़ीम की वज्ह से नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक सुन कर अंगूठे चूम कर आंखों से लगाना जाइज़ व मुस्तह़सन (यानी पसन्दीदा काम) है और सदियों से बुज़ुर्गाने दीन, उ़लमाए कामिलीन رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہِم ऐसा करते आए हैं नामे पाक पर अंगूठे चूमने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہِم के वाक़िआ़त और रिवायात कई सौ साल पहले की किताबों में मौजूद हैं जिस का मत़लब बिल्कुल वाज़ेह़ है कि येह **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों का त़रीक़ा है हमें भी इस पर अ़मल करना चाहिये। आइये ! इस नेक काम की मज़ीद तरग़ीब और शौक़ बढ़ाने के लिये एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और निय्यत कीजिये कि नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़रूर अंगूठे चूमेंगे। اِنْ شَآءَ الله

आंख से कंकरी निकल गई (वाक़िआ)

आज से तक़रीबन साढ़े पांच सौ साल के बुज़ुर्ग, अ़ज़ीम मुह़द्दिस इमाम सख़ावी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं, एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार हवा चली और एक कंकरी (Grit) मेरी आंख मे पड़ गई, निकालते निकालते थक गए लेकिन न निकली जिस की वज्ह से निहायत सख़्त दर्द हुवा। उन्हों ने मुअज़्ज़िन को "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहते हुए सुना तो "مَرْحَبًا بِحَبِيْبِىْ وَقُرَّةُ عَيْنِىْ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" पढ़ा, फ़ौरन कंकरी (Grit) निकल गई।

(المقاصد الحسنۃ، ص390، تحت الحدیث:1021)

ह़ज़रते रवाद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को जब इस वाक़िए की ख़बर मिली तो आप ने फ़रमाया : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो बरकात इतने ज़ियादा हैं कि उन के सामने इतनी बात (यानी आंख से कंकरी का निकल जाना) कोई ह़ैसिय्यत नहीं रखता। (المقاصد الحسنۃ، ص391، تحت الحدیث:1021) **अल्लाह** पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

इक दिल हमारा क्या है आज़ार इस का कितना   तुम ने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 101)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : आज़ार : दुख। **चलते फिरते मुर्दे :** ग़ैर मुस्लिम। **जिलाना :** ज़िन्दा करना

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक ने आप को येह मोजिज़ा अ़ता फ़रमाया है कि आप मुर्दों को ज़िन्दा कर देते हैं। कई अह़ादीसे मुबारका में आप के इस मोजिज़े के वाक़िआ़त मौजूद हैं बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस्लाम की दावत की बरकत से ऐसे बड़े बड़े ग़ैर मुस्लिम (जो दर ह़क़ीक़त मुर्दों से भी बढ़ कर थे क्यूंकि उन के दिल ज़िन्दा न थे, उन) कलिमा पढ़ कर इस्लाम में दाख़िल हो गए कि अब उन का ज़िक्रे ख़ैर हमारे लिये इ़बादत है। जब

आप इतने फ़ज़ाइलो कमालात वाले हैं तो हमारा दिल जो गुनाहों की सियाही से मुर्दा हो गया है उसे ज़िन्दा (यानी पाको साफ़) करना आप के लिये कोई मुश्किल नहीं, बस एक नज़रे रह़मत हमारे गन्दे दिल पर भी डाल दीजिये।

एक और मक़ाम पर लिखते हैं :

उन के नाम के सदक़े जिस से   जीते हम हैं जिलाते येह हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 483)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

कभी आंखें न दुखें

अ़ज़ीम मुह़द्दिस इमाम सख़ावी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मुअज़्ज़िन से "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" सुन कर कहे : "مَرْحَبًا بِحَبِيْبِىْ وَقُرَّةُ عَيْنِىْ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الله" फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे, तो उस की आंखें कभी न दुखेंगी। (المقاصد الحسنة، ص390، تحت الحديث:1021)

मेरी आंखों की ठन्डक

नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल ह़ज़रते इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِىَ اللهُ عَنْه से रिवायत है : जो शख़्स मुअज़्ज़िन को "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहता सुन कर येह कहे "مَرْحَبًا بِحَبِيْبِىْ وَقُرَّةُ عَيْنِىْ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الله" और अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए तो न कभी वोह अन्धा होगा न ही कभी उस की आंखें दुखेंगी।

(المقاصد الحسنة، ص391، تحت الحديث:1021)

नाबीना न हो

ह़ज़रते त़ाऊसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उन्हों ने ख़्वाजा शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अबी नसर बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से येह ह़दीस सुनी कि जो शख़्स मुअज़्ज़िन से कलिमाते शहादत सुन कर अंगूठों के नाख़ुन चूमे, आंखों से लगाए और येह दुआ पढ़ ले :

”اَللّٰھُمَّ احْفَظْ حَدَقَتَیَّ وَنُوْرَھُمَا بِبَرْکَۃِ حَدَقَتَیْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَنُوْرَھُمَا،“[1]
तो अन्धा न हो। (المقاصد الحسنۃ، ص391، تحت الحدیث:1021)

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام का फ़रमान

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सालेह़ मदनी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते मज्द मिसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अज़ान के दौरान नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर सुने और आप पर दुरूदे पाक पढ़ कर अपनी शहादत वाली उंगली और अंगूठे को मिला कर चूमे और अपनी आंखों से लगा ले तो उस की आंखें कभी न दुखेंगी। (المقاصد الحسنۃ، ص391، تحت الحدیث:1021)

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सालेह़ मदनी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने इ़राक़ या अ़जम के बाज़ मशाइख़ के ह़वाले से सुना है कि उन्हों ने फ़रमाया कि अपनी आंखों से (अंगूठे) लगाते वक़्त येह पढ़े : ”صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ یَا حَبِیْبَ قَلْبِیْ وَیَا نُوْرَ بَصَرِیْ وَیَا قُرَّۃَ عَیْنِیْ“ तर्जमा : ऐ मेरी आंखों की ठन्डक, ऐ मेरी आंखों के नूर और दिल के सुरूर मेरे सरदार या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर दुरूद हों।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उन में से हर शैख़ ने फ़रमाया : जब से मैं येह अ़मल कर रहा हूं मेरी आंखें नहीं दुखीं। मज़ीद आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! जब से मैं ने उन ह़ज़रात से सुना है, मेरी आंखों में भी कभी तक्लीफ़ न हुई, और मुझे उम्मीद है कि मेरी आंखें हमेशा आ़फ़ियत में रहेंगी और اِنْ شَآءَاللّٰہ में अन्धेपन से भी मह़फ़ूज़ रहूंगा। (المقاصد الحسنۃ، ص391، تحت الحدیث:1021)

1...तर्जमा : **ऐ अल्लाह** पाक ! ह़ज़रते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दोनों आंखों और उन के नूर की बरकत से मेरी दोनों आंखों और उन के नूर की ह़िफ़ाज़त फ़रमा।

आंखों का तारा नामे मुहम्मद
दिल का उजाला नामे मुहम्मद

शैदा न क्यूं हों इस पर मुसलमां
रब को है प्यारा नामे मुहम्मद

पूछेगा मौला लाया है क्या क्या
मैं येह कहूंगा नामे मुहम्मद

आंखों में आ कर दिल में समा कर
रंगत रचा जा नामे मुहम्मद

अपने जमीले रज़वी के दिल में
आ जा समा जा नामे मुहम्मद

(क़बालए बख़्शिश, स. 133,135)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

अ़ल्लामा त़ह़त़ावी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ का बयान

आज से तक़रीबन दो सौ साल पहले के फ़िक़्हे ह़नफ़ी के बहुत बड़े इमाम और ज़बरदस्त आ़लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा त़ह़त़ावी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ लिखते हैं : (अज़ान में) नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहादतों में से पहली को सुनने के वक़्त येह कहना "صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ" यानी या रसूलल्लाह ! **अल्लाह** पाक आप पर दुरूद (यानी रह़मत) भेजे, मुस्तह़ब है और दूसरी (शहादत यानी اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ) को सुनने के वक़्त आंखों पर अंगूठे रखने के बाद "قُرَّتْ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ" यानी या रसूलल्लाह ! आप से मेरी आंखें ठन्डी हो गईं, ऐ **अल्लाह** तू मुझे समाअ़त और बसारत से नफ़ा अ़त़ा फ़रमा, पढ़े तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस शख़्स के लिये जन्नत की त़रफ़ क़ाइद (यानी रहनुमाई करने वाले) होंगे।

(حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح، ص205)

शजरए क़ादिरिय्या की बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत

29 रमज़ानुल मुबारक 1428 हिजरी की बात है, एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में इज्तिमाई़ एतिकाफ़ में बैठे, यहां पुरकैफ़ मनाज़िर थे, नमाज़े फ़ज्र के बाद मोतकिफ़ीन शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत कर रहे थे, जब शजरए आ़लिया

क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया पढ़ा जाने लगा तो वोह इस्लामी भाई पहली सफ़ में आ कर बैठ गए। सब आ़शिक़ाने रसूल मिल कर बुलन्द आवाज़ से शजरा शरीफ़ के मन्ज़ूम दुआ़इया अशआ़र पढ़ रहे थे, जब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र मुबारक आया तो उन्हों ने अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए, अचानक उन पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई, सर की आंखें क्या बन्द हुईं उन के दिल की आंखें खुल गईं, उन्हों ने देखा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ शजरा शरीफ़ पढ़ने वाले तमाम इस्लामी भाई सुनहरी जालियों के रू ब रू ह़ाज़िर हैं और **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उ़श्शाक़ को शरबते दीदार पिला रहे हैं। ह़ाज़िरीन शजरए आ़लिया के दुआ़इया अशआ़र पढ़ रहे हैं और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुबारक हाथ बुलन्द किये उन दुआ़इया अशआ़र पर आमीन फ़रमा रहे हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

4 मवाक़ेअ़ पर अंगूठे न चूमें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! जब जब शहद से मीठा, प्यारा प्यारा नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लेने या सुनने की सआ़दत मिले तो ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निय्यत से निहायत अदब व ताज़ीम के साथ दोनों हाथों के अंगूठे चूम कर (चूमने की आवाज़ पैदा किये बग़ैर) आंखों से लगाइये (बाज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ शहादत की उंगली चूम कर उस के अन्दरूनी ह़िस्से यानी पोरे भी चूम कर लगाए जा सकते हैं) اِنْ شَآءَ اللّٰه ख़ूब सवाब के साथ साथ आंखों की बीनाई की ह़िफ़ाज़त होगी। अलबत्ता चार ऐसे मवाक़ेअ़ हैं जिस पर मेरे आक़ा आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इन मवाक़ेअ़ पर नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लेने या सुनने पर अंगूठे नहीं चूमे जाएंगे। ﴾1﴿ नमाज़ में ﴾2﴿ ख़ुत़्बे में ﴾3﴿ अज़ाने ख़ुत़्बा ﴾4﴿ तिलावत सुनते हुए (क्यूंकि हुक्मे शरई है जब ख़ुत़्बा या तिलावत सुनें तो पूरी तवज्जोह के साथ सुनें।) (फ़तावा रज़विय्या, 5/415, 8/468 मुलख़्ख़सन)

अंगूठे चूमने से मना किस ने किया है ?

इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَةُاللّٰہِ عَلَیۡه अपने रिसाले "مُنِيْرُ الْعَيْنِ فِيْ حُكْمِ تَقْبِيْلِ الْاِبْهَامَيْنِ" में नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने के बारे में बड़ी प्यारी बात फ़रमाते हैं जिसे आसान कर के पेश किया जाता है : हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक अज़ान में सुनते वक़्त अंगूठे या दोनों शहादत की उंगलियां चूम कर आंखों से लगाना बिल्कुल जाइज़ है, इस के जाइज़ होने पर कई दलाइल मौजूद हैं और बिलफ़र्ज़ जाइज़ होने पर कोई दलील न होती फिर भी नाजाइज़ कहने की कोई दलील नहीं थी क्यूंकि शरीअ़त में इसे कहीं मना नहीं किया गया। مَعَاذَ اللّٰه ! जो इस अ़मल को नाजाइज़ कहता है उस के ज़िम्मे सुबूत देना है कि वोह बताए कि क़ुरआनो ह़दीस या अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَیۡهِمۡ में कहां नामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर ताज़ीम में अंगूठे चूमने से मना किया गया है। मगर यहां तो अह़ादीसे मुबारका, फ़िक़्ह और उ़लमाए किराम के अक़्वाल और बुज़ुर्गाने दीन के इस अ़मल के जाइज़ होने पर कई दलाइल हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 5/430 तस्हीलन)

नामे पाके मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लुत़्फ़ लेने वाले फ़रिश्ते

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मैं क़ियामत के रोज़ जन्नत के दरवाज़े पर आऊंगा और उस को खोलने का हुक्म फ़रमाऊंगा तो जन्नत के दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रिश्ता ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : आप कौन ? तो मैं कहूंगा "मुह़म्मद" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे : "लब्बैक" क्यूं नहीं मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं आप से पहले किसी के लिये जन्नत का दरवाज़ा न खोलूं। (مسلم،ص107،حدیث:486)

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में आज से तक़रीबन 500 साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام मालिके जन्नत क़ासिमे नेमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से "आप कौन" इस लिये अ़र्ज़ करेंगे की वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आप का नामे मुबारक "मुह़म्मद" (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सुन कर उस से लज़्ज़त ह़ासिल करेंगे वरना जन्नत के दरवाज़ों से आर पार नज़र आता है वोह सिर्फ़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के लिये येह पूछेंगे। (فیض القدیر، 1/50، تحت الحدیث:2)

سُبْحَانَ الله ! जन्नत के दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रिश्ता, ख़ाज़िने जन्नत, ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام तो नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लुत़्फ़ पाएं और एक त़रफ़ वोह नादान जो अपने आप को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती भी कहे उसे नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने समझ नहीं आता येह कैसी बेवफ़ाई और बद नसीबी है। नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब बेसाख़्ता होंट एक दूसरे को चूम लेते हैं तो हम क्यूं न अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ عَنْه के मुबारक अ़मल की इत्तिबाअ़ करते हुए अपने अंगूठों या शहादत की उंगलियों को चूमें।

इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

लब पर आ जाता है जब नामे जनाब   मुंह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जां बेताब   अपने लब चूम लिया करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 114)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : लब : होंट । **नामे जनाब :** नामे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) । **शहदे नायाब :** क़ीमती शहद (जो बड़ी मुश्किल से मिलता हो) **वज्द में :** झूम कर । **बेताब :** बे इख़्तियार ।

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का प्यारा प्यारा, सोहना सोहना, मीठा मीठा नामे मुबारक "मुहम्मद" (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जब हम अपने मुंह से अदा करते हैं तो उस की मिठास से हमारा मुंह इतना मीठा हो जाता है जैसे कोई निहायत लज़ीज़ शहद मुंह में डालने से मुंह मीठा हो जाता है येही नहीं बल्कि नामे मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लेने से हमारे होंट भी झूम झूम कर बे इख़्तियार एक दूसरे को चूम लेते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

अ़क़्ल वालों के लिये अ़क़्ली दलील

ऐ आशिक़ाने रसूल ! सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का इश्क़े रसूल, अहादीसे मुबारका और सीरत की किताबें पढ़ने वाले जानते हैं कि वोह ह़ज़रात नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात को संभालते। बच्चों की पैदाइश पर सब से पहले इन्हें बारगाहे रिसालत में पेश करते ताकि बरकते मुस्तफ़ा ह़ासिल हो, बच्चों को नज़र या बीमारी हो जाती तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दम करवाते, सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के येह आमाल हमारे लिये मशअ़ले राह हैं। ह़ालांकि शरअ़न येह कोई वाजिब काम नहीं हैं लेकिन शरीअ़त में मना भी नहीं, आज भी आ़शिक़ाने औलिया बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से बरकत ह़ासिल करने के लिये अपने बच्चों को उन की बारगाह में ले जाते और उन की बरकात पाते हैं। ताबेई़न, तबए ताबेई़न और सदियों से कई बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के अदब व ताज़ीमे मुस्तफ़ा के ऐसे ऐसे अन्दाज़ हैं जिस पर शरअ़न कोई गिरिफ़्त नहीं, आ़शिक़ाने रसूल महब्बते रसूल में बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की पैरवी में उन को अपनाते और बरकतें पाते हैं।

करोड़ों मालिकियों के पेशवा, इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास कौन सी शरई़ दलील थी जिस की वज्ह से आप ह़दीसे पाक निहायत एहतिमाम के साथ

यानी ग़ुस्ल कर के, अच्छा लिबास पहन कर और ख़ुश्बू लगा कर पढ़ाते थे। (الشفا،2/45)

यक़ीनन आप के मुबारक दिल में ताज़ीमे मुस्तफ़ा थी जिस वज्ह से आप ह़दीसे मुबारक का इस क़द्र अदबो एह़तिराम करते थे येही नहीं बल्कि आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ तो मदीनए पाक से बाहर नहीं जाते थे कि कहीं मदीनए पाक से बाहर मौत न आ जाए आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ मदीनए पाक में सुवारी पर सुवार न होते थे। आप ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ दियारे मह़बूब मदीनतुर्रसूल का इस क़दर अदबो एह़तिराम करते थे जो बज़ाहिर किसी सह़ाबी से साबित नहीं मगर येह आप का इ़श्क़े रसूल था और सदियों से आज तक किसी आ़लिमे दीन ने भी इस ताज़ीम से मना नहीं किया क्यूंकि शरीअ़त में इस से कहीं मना ही नहीं किया गया। मज़ीद चन्द बुज़ुर्गों के आमाल पढ़िये और अपने दिलों में ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बढ़ाइये :

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबू अय्यूब सख़्तयानी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ बड़े आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग थे आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ के सामने जब भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर किया जाता तो आप इस क़दर रोते कि देखने वालों को रह़म आता। (حلیۃ الاولیاء،3/4،حدیث:2916۔الشفا،2/42)

ख़ान्दाने अहले बैत के चश्मो चराग़ और अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ बिन मुह़म्मद رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ बड़े ख़ुश मिज़ाज और मुस्कुराने वाले बुज़ुर्ग थे मगर जब आप की मह़फ़िल में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होता तो आप का रंग मुबारक (हैबत व ताज़ीमे मुस्त़फ़ा में) पीला हो जाता। (الشفا،2/42)

अ़ज़ीम तबए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ज़िरार बिन मुर्रह رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि सलफ़े सालिह़ीन बग़ैर वुज़ू ह़दीसे पाक बयान करने को मकरूह (यानी नापसन्द) ख़याल करते थे। (الشفا،2/45)

यक़ीनन इन बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ के येह पाकीज़ा आमाल मह़ब्बत व ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से थे जिन को बाद में आने वाले उ़लमाए किराम ने अपनी किताबों में, हमारे दिलों में अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बढ़ाने के लिये लिखा, येह आमाल शरअ़न न फ़र्ज़ हैं न वाजिब लेकिन दिल में इ़श्क़े रसूल रखने वालों के लिये बड़े ज़ौक़ अफ़्ज़ा और ईमान अफ़रोज़ हैं और क़ुरआनो ह़दीस में इन के मना का हुक्म भी नहीं। **अल्लाह** पाक हमें भी तौफ़ीक़ दे तो हम भी इ़श्क़े रसूल में डूब कर बा वुज़ू ताज़ीमे मुस्त़फ़ा में अह़ादीसे मुबारका पढ़ें सुनें तो क्या बात है, नामे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अंगूठों को चूमें तो क्या बई़द :

आंखें जो बन्द हों तो मुक़द्दर खुलें ह़सन   जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

(ज़ौक़े नात, स. 157)

तुर्क आ़शिक़ाने रसूल का मह़ब्बत भरा अन्दाज़

तुर्क आ़शिक़ाने रसूल के इ़श्क़े रसूल की भी क्या ही बात है, जिस अ़क़ीदत व एह़तिराम के साथ सल्त़नते उ़स्मानिया ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ की तामीर व तौसीअ़ का काम किया, तारीख़ उस की मिसाल पेश नहीं कर सकती है। सल्त़नते उ़स्मानिया के वक़्त से या इस से भी पहले तुर्किया के आ़शिक़ाने रसूल में एक इ़श्क़े रसूल भरा ख़ूबसूरत अन्दाज़ येह भी देखा गया है कि दौराने गुफ़्तगू जब कोई नामे मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ले तो येह आ़शिक़ाने रसूल अपने सीने पर मह़ब्बत से दिल की जानिब हाथ रख कर नामे मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से वालिहाना मह़ब्बत का इज़्हार करते हैं। यक़ीनन इन का येह अन्दाज़ आ़शिक़ाने रसूल के दिलों में इ़श्क़े रसूल बढ़ाने और ईमान ताज़ा करने वाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! बानिये दावते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ सच्चे आ़शिक़े रसूल हैं, आप को जब तुर्क आ़शिक़ाने रसूल के इस अन्दाज़ का इ़ल्म हुवा तो आप ने भी इस अन्दाज़ को अपनाया और आप को देख कर कई इस्लामी भाई इस अन्दाज़ को

अपनाते हैं, वैसे भी हमारे हां बाज़ लोग जब सलाम करते हैं तो हाथ मिलाने के बाद अपना सीधा हाथ सीने पर लगाते हैं जिस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं। जब किसी आ़म फ़र्द से सलाम कर के हाथ सीने से लगाने में ह़रज नहीं तो ताज़ीमे मुस्त़फ़ा की ख़ाति़र नामे पाक ले या सुन कर हाथ सीने पर लगाना, अदबन सर झुकाना बड़ी सआ़दत मन्दी की बात है।

नामे पाके मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आला ह़ज़रत

इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नामे पाके मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर किस क़दर अदबो एह़तिराम का इज़्हार फ़रमाते हैं। अपने नातिया कलाम "ह़दाइक़े बख़्शिश" में लिखते हैं :

ब अदब झुका लो सरे विला कि मैं नाम लूं गुलो बाग़ का
गुले तर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा चमन उन का पाक दियार है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 353)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : ब : साथ। **सरे विला :** मह़ब्बत। **गुले तर :** तरो ताज़ा फूल। **चमन :** बाग़। **दियार :** शहर।

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मैं एक ऐसी अ़ज़ीम तरीन हस्ती का नाम मुबारक लेने लगा हूं जो कि अस्ल मक़्सूदे काइनात हैं और जिस शहर में वोह तशरीफ़ फ़रमा हैं वोह शहर काइनात का नगीना है लेकिन मैं उस हस्ती का नामे पाक जब लूंगा जब आप सब उन की ताज़ीमो तौक़ीर और मह़ब्बत में अपने सरों को अदबो एह़तिराम के साथ झुकाएंगे तो येह लीजिये ! वोह इ़ज़्ज़तो शान वाली हस्ती, इस काइनात के ह़सीन तरीन बाग़ "मदीनए पाक" में रहते हैं और उस बाग़ में महकने और अपनी ख़ुश्बूएं बिखेरने वाले तरो ताज़ा फूल मेरे आक़ा व मौला "मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।"

मैं इ़श्क़े नबी में रहूं गुम हमेशा तू दीवाना ऐसा बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

अंगूठे चूमने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द वस्वसों के जवाबात

नामे मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर मह़ब्बत व ताज़ीम में अंगूठे चूमने पर बाज़ लोगों को शैत़ान त़रह़ त़रह़ के वस्वसे दिला कर बहकाता है फिर शैत़ानी वस्वसों में आने वाले वोह लोग भोले भाले आ़शिक़ाने रसूल को इस पाकीज़ा काम के बारे में वस्वसों में मुब्तला करने की कोशिश करते हैं, यहां चन्द वस्वसे और उन का इ़लाज पेश किया जाता है। इस का पढ़ना मालूमात में इज़ाफ़े का सबब बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ

लेकिन याद रखिये ! नामे पाक पर अंगूठे चूमना, दुरूदो सलाम में खड़े होना येह इ़श्क़ वालों के सौदे हैं, जो सआ़दतमन्द मह़ब्बते रसूल से रचा बसा होगा उसे इन बा बरकत आमाल की क़द्रो मन्ज़िलत मालूम होगी अलबत्ता जिस की क़िस्मत में ही इस से दूरी हो उस के बारे में हिदायत की दुआ़ की जा सकती है। आप ने कई लोगों को देखा होगा जो सलाम करने के बाद अपने हाथ को सीने से लगाते हैं कभी इस के बारे में किसी ने हुक्मे शरई़ पूछा ? कि ऐसा करना जाइज़ है या नाजाइज़ ? अपने बच्चे को मह़ब्बत और शफ़्क़त में हाथ पांव और सर वग़ैरा नजाने कहां कहां चूमते हैं इस पर कभी किसी ने कुछ बोला कि येह चूमना कहां लिखा है ? बस मह़ब्बत व ताज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में ही ख़याल आता है कि येह कहां लिखा है ? येह तो आ़शिक़े रसूल की क़िस्मत में लिखा है।

येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

क्या आप को भी नूर नज़र आता है ?

वस्वसा : ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने अंगूठों में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर को देखा तो चूमा, क्या आप को भी नूर नज़र आता है ? अगर नहीं आता तो फिर क्यूं चूमते हैं ?

जवाब : مَاشَآءَاللّٰہ ! आप के इस सुवाल से कम अज़ कम एक बात तो वाज़ेह़ हो गई कि आप हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

को "नूर" मानते हैं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! येह क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। अब रहा आप का येह सुवाल कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को नूरे मुस्त़फ़ा नज़र आया था तो क्या हमें नूर नज़र आता है ? इस ह़वाले से अ़र्ज़ येह है कि आप ह़ज के मनासिक (यानी अरकान) में त़वाफ़ करते हुए ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम दूर से क्यूं करते हैं ? मिना में जमरात को कंकरियां क्यूं मारते हैं ? क्या आप को मिना में शैत़ान (इब्लीस) नज़र आता है ? और हां ! आप मसआ़ा में सई़ क्यूं करते हैं ? क्या आप को भी प्यास की शिद्दत दौड़ाती है ? अगर दियानतदारी से जवाब दिया जाए तो आप का जवाब येह होगा कि चूंकि त़वाफ़ में रश बहुत होता है और हर किसी का हर बार ह़जरे अस्वद को चूमना आसान नहीं है तो इस लिये दूर से खड़े हो कर रिवायात पर अ़मल कर के अपने हाथों के ज़रीए़ इस्तिलाम करते (यानी चूमते) हैं। इसी त़रह़ सई़ की सुन्नत ह़ज़रते बीबी हाजिरा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की याद में अदा करते हैं कि जब वोह अपने नन्हे मुन्ने शहज़ादे ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَیْہِ السَّلَام की प्यास से बेताब हो कर बार बार दो पहाड़ियों सफ़ा और मरवह के दरमियान दौड़ी थीं और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने मिना के मक़ाम पर शैत़ान को देख कर तीन मरतबा कंकरियां मारी थीं, अब ह़ाजियों को रहती दुनिया तक उन ह़ज़रात की इन अदाओं को अदा करने का ह़ुक्म दिया गया है तो जब इतने सारे काम आप इतने अ़ज़ीम बुज़ुर्गों के तसव्वुरात और उन की याद में करते हैं तो ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की याद में आप अपने अंगूठों को भी चूम लीजिये। क्या बई़द आप सच्चे दिल से अ़क़ीदत व ताज़ीम के साथ अंगूठे चूमें तो आप पर भी करम हो जाए...

अंगूठे चूमना किसी किताब से साबित नहीं

वस्वसा : अंगूठे चूमना किसी किताब से साबित नहीं।

जवाब : क्या आप ने चौदह सौ साल से अब तक लाखों बल्कि करोड़ों तमाम दीनी कुतुब पढ़ ली हैं ? जो आप कह रहे हैं कि किसी किताब में नहीं लिखा। यक़ीनन आप का जवाब होगा, नहीं, सब दीनी कुतुब तो नहीं पढ़ीं। तो अ़र्ज़ येह है कि जो

किताबें आप ने अब तक नहीं पढ़ीं, नामे पाके मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने का बयान उन किताबों में मौजूद है और इस के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस व रिवायात पिछले सफ़ह़ात में बा ह़वाला पेश की गई हैं उन्हें पढ़िये और ख़ुद भी नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमिये और दूसरों को भी इस नेक काम की तरग़ीब दिला कर सवाब के ह़क़दार बनिये।

सह़ीह़ ह़दीस न होने का क्या मत़लब है ?

वस्वसा : नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने के बारे में कोई सह़ीह़ ह़दीस नहीं है, येह बिदअ़त (यानी नया काम) है।

जवाब : सब से पहले येह बताइये कि मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ह़ीदेस पाक की जो मुख़्तलिफ़ अक़्साम बयान करते हैं क्या उन का ज़िक्र क़ुरआनो ह़दीस में खुले अल्फ़ाज़ के साथ बयान हुवा है ? तो आप का जवाब यक़ीनन "नहीं" होगा। अच्छा ! येह बताइये क्या किसी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने किसी ह़दीस को "सह़ीह़" या "ह़सन" या "ज़ईफ़" कहा है ? यक़ीनन इस में भी आप कहेंगे कि "नहीं" तो जो काम क़ुरआनो ह़दीस में न हो और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने भी न किया हो वोह आप के नज़्दीक क्या है ? फिर आप क्यूं ह़दीसे सह़ीह़ की रट लगाते हैं ?

बेशक ! मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने जो अक़्सामे ह़दीस बयान की हैं और उन के क़वाइदो ज़वाबित़ बयान किये हैं येह नए काम हैं लेकिन येह काम शरई ज़रूरत की वज्ह से हैं तो येह बिदअ़ते ह़सना (यानी अच्छा नया काम) है जिस पर उन ह़ज़रात को क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा और इस पर आज तक किसी ने कोई एतिराज़ नहीं किया क्यूंकि सब उन क़वाइद और इस्त़िलाह़ात को मानते हैं।

जब आप सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से भी बाद में आने वाले मुह़द्दिसीने किराम से इ़ल्मे ह़दीस की इस्त़िलाह़ात लेते और उसे दुरुस्त समझते हैं तो फिर नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने वाली रिवायात सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم

समेत कई बुज़ुर्गाने दीन رَحمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم से मरवी है (जो पीछे गुज़र चुकीं) उन पर क्यूं अ़मल नहीं करते ?

नामे पाक पर अंगूठे चूमने वाली रिवायत का हुक्म और ह़दीसे सह़ीह़ का मत़लब

अहम बात : सह़ीह़ ह़ीदस का मत़लब येह नहीं कि सह़ीह़ और ग़लत़। बल्कि मुह़द्दिसीने किराम رَحمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم ने ह़दीसे पाक की कई अक़्साम बयान की हैं। जिन में सब से आला क़िस्म "सह़ीह़" है। अज़ान में नामे मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर अंगूठे या शहादत की उंगलियां चूमने पर सह़ीह़ ह़दीस न होने का हरगिज़ येह मत़लब नहीं कि مَعَاذَ اللہ ! येह ह़ीदसे पाक मौज़ूअ़ (यानी मन घड़त) है बल्कि अहले इ़ल्म जानते हैं कि अगर कोई ह़दीस सह़ीह़ न हो तो वोह दूसरी क़िस्म की ह़दीसे पाक में से होगी, सिह़ाह़े सित्ता (ह़दीसे पाक की सब से ज़ियादा क़ाबिले एतिमाद 6 कुतुब : बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दावूद, नसाई, तिरमिज़ी और इब्ने माजा) में सब अह़ादीसे मुबारका सह़ीह़ नहीं बल्कि अक्सर सह़ीह़ होने की वज्ह से उन किताबों को "सिह़ाह़" (यानी सह़ीह़) कहा जाता है।

"अंगूठे चूमने के बारे में कोई सह़ीह़ ह़दीस नहीं है" इस वस्वसे को आसान अल्फ़ाज़ में यूं समझिये कि अगर कोई शख़्स किसी से पूछे आप जहाज़ उड़ा लेते हैं और वोह जवाब दे कि नहीं। तो क्या इस का मत़लब येह होगा कि उस इन्सान को कुछ भी चलाना नहीं आता ? हो सकता है वोह शख़्स बह़री जहाज़ या ट्रेन या ट्रक या कार या बाइक चला लेता हो। एक बात की नफ़ी से हर चीज़ की नफ़ी नहीं होती। मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की किताब "مُنِیۡرُ الۡعَیۡنِ فِیۡ حُکۡمِ تَقۡبِیۡلِ الۡاِبۡہَامَیۡنِ" पढ़िये ! आप رَحمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ ने इस किताब में इ़ल्मे ह़दीस के दरिया बहा दिये हैं, नामे मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर अंगूठें चूमने के मौज़ूअ़ पर आला ह़ज़रत رَحمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ ने तक़रीबन 200 सफ़ह़ात की येह अ़ालीशान

किताब 29 साल की उ़म्र में लिखी। अगर कोई ईमानदारी के साथ और तन्क़ीद के चश्मे उतार कर अ़क़ीदत व मह़ब्बत की ऐ़नक लगा कर इस को पढ़े तो वोह ख़ुद भी नामे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर अंगूठे चूमेगा बल्कि दूसरों को भी चूमने की तरग़ीब दिलाएगा मगर तजरिबा शर्त़ है ...

नामे पाक पर अंगूठे चूमना टोटका है ?

वस्वसा : अंगूठे चूमना कोई फ़ज़ीलत का काम नहीं है बल्कि येह तो एक क़िस्म का टोटका है।

जवाब : नामे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमना न सिर्फ़ सुन्नते सिद्दीक़ी बल्कि सुन्नते ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام है और ह़दीसे पाक में है : "اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ" यानी बरकत तुम्हारे बड़ों के साथ है। (معجم اوسط، 6/342، حدیث:8991)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस रिसाले में बयान की गई अह़ादीसे मुबारका में ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ عَنْهُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से इस मुबारक अ़मल के फ़ज़ाइल के अक़्वाल व वाक़िआ़त बयान हुए हैं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सदियों से बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का येह अ़मल रहा है लिहाज़ा इस अ़मल को ज़रूर सवाब की निय्यत से कीजिये सवाब भी मिलेगा और फ़ज़ाइल के साथ साथ इस के दुनियावी फ़वाइद यानी नाबीनाई वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त भी होगी।

अंगूठे चूमने के बावुजूद चश्मा लगा हो तो

वस्वसा : बाज़ लोग इस त़रह़ वस्वसा डालते हैं कि देखो फ़ुलां कितने अ़र्से से अंगूठे चूम रहा है मगर इस की बीनाई कमज़ोर है और वोह चश्मा लगाता है।

वस्वसे का इ़लाज : इस वस्वसे के कई जवाबात हो सकते हैं मसलन अह़ादीसे मुबारका में मुख़्तलिफ़ अमराज़ या मसाइल में कई मख़्सूस दुआ़एं पढ़ने की तरग़ीब मौजूद है अगर किसी के पढ़ने के बावुजूद वोह मरज़ या मस्अला ह़ल नहीं हो तो उस से उस ह़दीसे पाक पर कोई असर नहीं पड़ता बल्कि **अल्लाह** पाक कभी अपने बन्दे

का इम्तिहान भी लेता है कि मेरा बन्दा इस आज़माइश के बावुजूद औरादो वज़ाइफ़ पढ़ता है या नहीं ? लिहाज़ा किसी पर तन्क़ीद करने के बजाए **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी, नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ान पर नज़र रखिये अगर रब को मन्ज़ूर हुवा तो सब अमराज़ ख़त्म हो जाएंगे और अगर **अल्लाह** पाक इम्तिह़ान ले तो उस पर भी राज़ी रहना चाहिये।

चे सोहना मेरे दुख विच राज़ी ते मैं सुख नूं चुल्हे पावां

क्या अंगूठे चूमना फ़र्ज़ है ?

वस्वसा : नामे मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अंगूठे चूमने को आप फ़र्ज़ो वाजिब कहते हैं।

जवाब : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम ब वक़्ते अज़ान व इक़ामत सुन कर अंगूठे चूम कर आंखों पर रखना न फ़र्ज़ है न वाजिब और न ही सुन्नते मुअक्कदा। बल्कि येह एक "मुस्तह़ब काम" है, करें तो अच्छा, न करने वाले को गुनहगार नहीं कहा जाएगा। अहले सुन्नत के नज़्दीक येह मसअला है और इसी पर हमारे दलाइल हैं। हां जो कोई इस पाकीज़ा अ़मल को गुनाह समझता हो वोह ज़रूर गुनहगार है क्यूंकि जिस चीज़ को शरीअ़त ने गुनाह नहीं कहा उसे जो गुनाह कहेगा वोह ख़ुद गुनहगार होगा।

लह़द का ख़ौफ़ क्यूं हो रोज़े मह़शर का हो क्या खटका
लिये जाता हूं दिल पर लिख के मैं तुग़रा मुह़म्मद का

(क़बालए बख़्शिश, स. 55)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

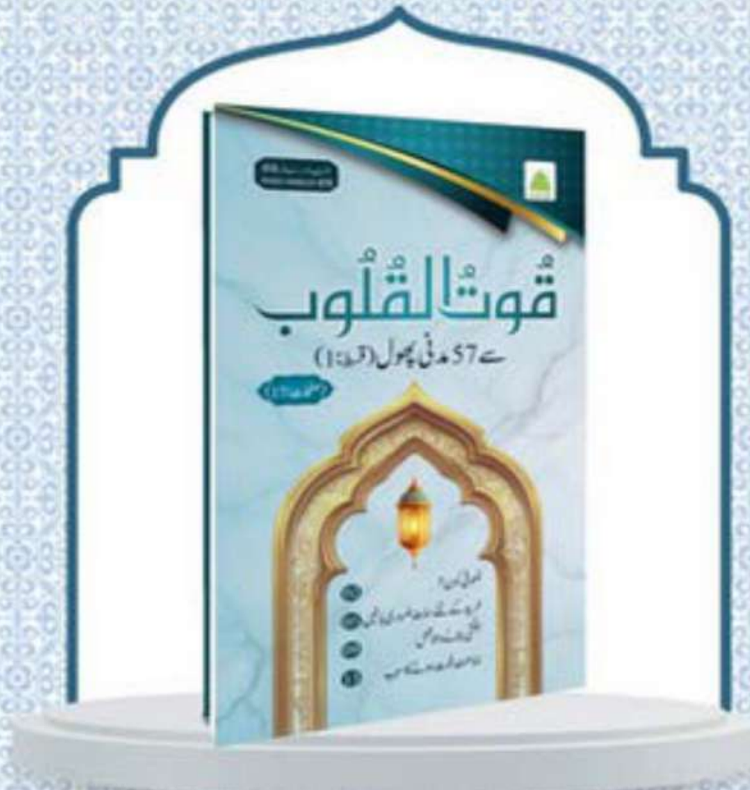

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025